RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-09
September-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

राजनीतिक व्यवस्था में संचार की भूमिकाः सामान्य विश्लेषण

डॉ. सतीश कुमार मीणा

(शोधार्थी)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 September 2019

Keywords
राजनीतिक व्यवस्था, लोकतंत्र, संचार, संकल्पना।

ABSTRACT

संचार साधनों के विकास ने मनुष्य को न केवल सामाजिक बल्कि राजनीतिक मानव भी बना दिया है। संचार साधनों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही राजनीति विज्ञान में राजनीतिक संचार की संकल्पना का विकास किया गया है। आज राजनीतिक संचार राजनीति विज्ञान की वह महत्वपूर्ण अवधारणा बन चुका है जिसके बिना किसी राजनीतिक व्यवस्था के सम्पूर्ण ताने–बाने को समझना कठिन है। व्यक्ति का राजनीतिकरण केवल राजनीतिक संचार की व्यवस्था द्वारा ही किया जा सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक व्यवस्थाओं में इस अवधारणा का महत्व अधिक हो गया है। राजनीतिक संचार ने राजनीतिक व्यवस्था को नई दिशा दी है। व्यक्ति की बढ़ती राजनीतिक सहभागिता व सक्रियता राजनीतिक संचार के महत्व को प्रतिपादित करती है। राजनीतिक व्यवस्था के निवेशों और निर्गतों को जोड़ने वाली कड़ी राजनीतिक संचार ही है। आज राजनीतिक संचार के बिना कोई भी संगठन तथा राजनीतिक व्यवस्था अपने उद्देश्यों तथा लक्ष्यों में सफल नहीं हो सकती। लोकतन्त्रीय शासन प्रणालियों में राजनीतिक संचार का जो महत्व है, वह सर्वाधिकारवादी राजनीतिक व्यवस्थाओं में भी है। राजनीतिक संचार राजनीतिक व्यवस्था के एक भाग से दूसरे भाग को जोड़कर राजनीतिक व्यवस्था को गतिशील बनाता है। इसी कारण आज राजनीतिक संचार को राजनीतिक व्यवस्था की रक्तधारा कहा जाने लगा है।

शोध विस्तारः– राजनीतिक संचार की अवधारणा 'संचार' की अवधारणा पर आधारित है। संचार को समझे बिना राजनीतिक संचार को समझना कठिन है। संचार को परिभाषित करने का व्यवस्थित प्रयास सर्वप्रथम नॉरबर्ट वीनपर ने किया है। उसके अनुसार ''संचार एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क तक सूचनाओं का आदान–प्रदान है।'' उसने आगे कहा है ''कि जीवन में पर्यावरण से जानकारी को ग्रहण करना, उस जानकारी का पर्यावरण के साथ तालमेल बैठाने में प्रयोग करना और बाहरी पर्यावरणों के साथ प्रभावी ढंग से रहने की प्रक्रिया ही संचार है।''[1] संचार शब्द की उत्पति ग्रीक शब्द "Kubernetes" से हुई है जिसका अंग्रेजी में अर्थ 'संचालक' है। वीनर ने इसे अंग्रेजी में इसके लिए "Cybernetics" शब्द का प्रयोग किया है। उसकी राजनीतिक संचार की संकल्पना को राजनीतिक साइबरनेटिक्स भी कहा जाता है। 'साइबरनेटिक्स' सूचनाओं के आदान–प्रदान को ही इंगित करता है। वीनर की बात से अन्य राजनीतिक विज्ञान भी सहमत है। राजनीतिक विज्ञान में प्रयुक्त संचार शब्द का अर्थ उस अर्थ से अलग है जिसका संबंध समाचार पत्रों, रेडियों और दूरदर्शन जैसे संचार साधनों से लिया जाता है। राजनीतिक संचार तो राजनीतिक व्यवस्था के एक भाग से दूसरे भाग तक मांगों और नियमों (निर्गतों) का गत्यात्मक संचरण है। यह राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न भागों को आपस में जोड़ता है। इसलिए राजनीतिक संचार का संबंध राजनीतिक व्यवस्था के अध्ययन से ही संबंधित है।

विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करने से यह तथ्य उजागर होता है कि प्रत्येक देश की राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक संचार की कुछ औपचारिक व अनौपचारिक संरचनाऐं या अभिकरण है जो राजनीतिक संचार के कार्य करती है। औपचारिक संरचनाओं में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, राजनीतिक दल व हित समूह शामिल है, जबकि अनौपचारिक संरचनाओं में परिवार, रक्त संबंध, वंश परम्पराऐं, निकटस्थ समूह, पडोसी, समुदाय, ग्राम, जातीय और भाषायी समूह आदि है। लेकिन इनके साथ–साथ प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में जनसम्पर्क के साधन भी हैं जो उपरोक्त संरचनाओं को व्यावहारिक रूप प्रदान करते है। ऑमण्ड तथा पावेल ने इन संरचनाओं को पांच भागों में बांटा है।

प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में निवेश प्रक्रिया को गति देने के लिए कुछ संरचनाऐं होती है जो मांगों और समर्थनों के रूप में निवेशों की राजनीतिक व्यवस्था में प्रवेश कराती है। ये संरचनाऐं प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में पाई जाती है, लेकिन प्रजातन्त्रीय देशों में इनका प्रभाव अधिक रहता है। राजनीतिक दल, हित समूह तथा दबाव समूह ऐसी ही औपचारिक संरचनाऐं है जो जनता की मांगों को राजनीतिक नेताओं तक पहुंचाते है। बलों व समूहों तक जनता की पहुंच होने के कारण ये मांगे आसानी से राजनीतिक व्यवस्था में प्रवेश कर जाती है। सरकारी नियन्त्रण से मुक्त होने के कारण ये समूह राजनीतिक दलों के माध्यम से अपने व्यक्तिगत सम्पर्कों के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कारण अपना यह कार्य आसानी से कर लेते है। इसी कारण हित समूहों की निवेश प्रक्रिया के वाहक कहा जाता है। जिस तरह निवेश संरचनाऐं जनता की मांगे राजनीतिक नेतृत्व तक पहुंचाती है, उसी तरह वे सरकार की बाते भी जनता तक पहुंचाती है। अब राजनीतिक निवेशों की संरचनाऐं राजनीतिक संचार के महत्वपूर्ण अभिकरण है।[2]

जिस तरह निवेशों की संरचनाऐं होती है उसी तरह प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में निर्गतों की भी औपचारिक राजनीतिक संरचनाऐं होती है। इन संरचनाओं में सरकारी व प्रशासकीय मशीनरी आती है। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा नौकरशाही ऐसी ही संरचनाऐं है। इनका राजनीतिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हाथ होता है। सूचनाओं को राजनीतिक व्यवस्था के एक भाग से दूसरे भाग तक पहुंचाने में ये महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इन्हीं के कारण राजनैतिक व्यवस्था गतिशील बनी रहती है और सम्पूर्ण शासनतन्त्र एक ढांचें में बंधा रहता है। ये संस्थाऐं जनता व नेताओं को जोड़ती है और जनता को राजनीतिक व्यवस्था के घेरे में जानकारी देती है। इन्हीं संरचनाओं के माध्यम से निर्गतों के रूप में निर्णयों को समाज में लागू किया जाता है। सरकारी तन्त्र की सभी सूचनाओं या निर्णयों को ये संरचनाऐं ही समाज में वितरित करती है। इस तरह निर्गत संरचनाऐं भी राजनीतिक संचार की प्रक्रिया में अहम भूमिका अदा करने वाले अभिकरण है।

इन संरचनाओं के अन्तर्गत परिवार, जाति, मत, रक्त संबंध, वंश परम्पराऐं, निरूक्त समूह, पडोसी, समुदाय, ग्राम आदि आते है। इन सामाजिक व आर्थिक संरचनाओं का भी राजनीतिक संचार में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। कबीलों तथा जनजातियों के सरदार अपने विशेष प्रभाव के कारण अपने समाज पर राजनीतिक प्रभाव डालने में सफल रहते है। राजनीतिक समाज की समस्त जानकारी रखने वाले व उसका प्रभाव करने वाले यही एक मात्र आधार होते है। आजकल धार्मिक नेताओं द्वारा भी राजनीतिक प्रश्नों तथा विवादों की व्याख्या की जाने लगी है। श्रीलंका तथा वियतनाम में धार्मिक नेता ही विशिष्ट वर्गों तथा साधारण जनता में राजनीतिक सम्प्रेषण का कार्य करते है। परिवार व जातीय समूह भी राजनीतिक सूचनाओं के आदान–प्रदान में पीछे नहीं है। वास्तव में सभी परम्परागत सामाजिक संरचनाऐं ही राजनीतिक ज्ञान की सूचनाओं का आदान–प्रदान करने वाले अभिकरण है। इन्हें जनसम्पर्क के साधन भी कहा जाता है। इनमें पत्र पत्रिकाऐं, रेडियों, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पुस्तकें, इन्टरनेट आदि व्यवस्थाऐं शामिल है। इन साधनों का प्रयोग सभी राजनीतिक दल, दबाव समूह तथा निवेश व निर्गत राजनीतिक संरचनाऐं खुलकर करती है। लोकतान्त्रीय देशों में इन साधनों को सरकारी नियन्त्रण से मुक्त रखकर सम्प्रेषण कार्य कराया जाता है, जबकि सर्वाधिकारवादी देशों में ये सरकारी नियन्त्रण में रहकर ही संचार कार्य करती है। ये साधन विशेषीकृत व विभेदीकृत होने के कारण राजनीतिक संचार के सर्वाधिक प्रभावशाली साधन माने जाते है। ये साधन जन मान्यताओं और अभिरूचियों को राजनीतिक व्यवस्था के अनुकूल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। इसलिए जनसंचार के साधन राजनीतिक संचार के सबसे अच्छे व प्रभावी अभिकरण है।[3]

राजनीतिक संचार की प्रक्रिया में व्यक्ति से अनौपचारिक व प्रत्यक्ष सम्पर्क भी राजनीतिक संचार का अभिकरण है। यह अभिकरण प्रत्येक प्रकार के नियन्त्रण से मुक्त रहता है। राजनीतिक संचार के जन संचार के अभिकरण भी इतने प्रभावशाली नहीं होते, जितना यह अभिकरण। राजनीतिक घटनाओं की जानकारी रखने वाले व्यक्ति राजनीतिक संचार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति अवश्य ही राजनीतिक बातों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। राजनीतिक घटनाओं की जानकारी रखने वाले व्यक्ति कभी कभार राजनीतिक नेतृत्व को भी प्राप्त करे लेते है। उस स्थिति में उनकी राजनीतिक संचार के अभिकरण के रूप में भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजनीतिक संचार को गति देने वाली अनेक सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं या अभिकरण है। सभी अभिकरण राजनीतिक व्यवस्था में एक स्थान से दूसरे स्थान तक एक भाग से दूसरे भाग तक राजनीतिक सूचनाओं का आदान–प्रदान करते है। ये अभिकरण ही राजनीतिक व्यवस्था की गतिशीलता का आधार होते है और राजनीतिक व्यवस्था में रक्त संचार की तरह कार्य करते है। राजनीतिक व्यवस्था के जीवन का आधार यहीं अभिकरण होते है। इसी कारण इन्हं राजनीतिक व्यवस्था की प्राणवायु कहा जाता है।

प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक संचार की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। राजनीतिक संचार ही व साधन है जो व्यवस्था के पक्ष में स्वस्थ जनमत तैयार करता है और राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है। राजनीतिक जागरूकता लाकर राजनीतिक विकास को गति देने में संचार साधनों की भूमिका ही महत्वपूर्ण रहती है। लोकतन्त्रीय व्यवस्था में तो राजनीतिक संचार के अभिकरण ही व्यवस्था को गतिशील बनाए रखते है। राजनीतिक व्यवस्था के आधार पर उद्योगों को भी संचार के साधन ही सहारा प्रदान करते है। राजनीतिक व्यवस्था के लिए विशेष राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण तैयार करने में राजनीतिक संचार के अभिकरणों की ही महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। राजनीतिक संचार द्वारा राजनीतिक व्यवस्था के लिए किए गए कार्य ही उसकी भूमिका को स्पष्ट करते है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था कुछ न कुछ प्रकार्यों का निष्पादन करती है।इन प्रकार्यों के निष्पादन के लिए बहुप्रकार्यात्मक राजनीतिक संरचनाऐं होती है। इन संरचनाओं की प्रकार्यात्मक व्यवस्था को राजनीतिक प्रक्रिया कहा जाता है। यह राजनीतिक प्रक्रिया राजनीतिक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

व्यवस्था के निवेश व निर्गत संबंधी कार्यों को निष्पादित करने वाली व्यवस्था है। इसमें राजनीतिक संचार की संरचनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। राजनीतिक संचार ही राजनीतिक प्रक्रिया को गतिशील बनाकर राजनीतिक व्यवस्था का स्थायित्व प्रदान करता है। कार्ल ड्यूश ने राजनीतिक व्यवस्था में प्रक्रियात्मक संरचनाओं के संचालन के लिए एक नया सिद्धान्त पेश किया है, जिसे राजनीतिक संचार का सिद्धांत कहा जाता है। कार्ल ड्यूश का कहना है कि अपने क्रियात्मक रूप को व्यवहारिक व गतिशील बनाए रखने के लिए प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था को सूचना प्रवाहों की आवश्यकता पड़ती है। उसका कहना है कि राजनीति और सरकार निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मानव प्रयासों का संचालन और समन्वय करने की प्रक्रियाऐं है। इन प्रक्रियाओं का गत्यात्मक अध्ययन ही राजनीतिक प्रक्रिया का अध्ययन है।[4]

इन संकल्पनाओं के आधार पर कार्ल ड्यूश ने अपना सिद्धान्त खड़ा किया है और राजनीतिक व्यवस्था की क्रियात्मकता पर संचार के प्रभाव को इंगित किया है। कार्ल ड्यूश का कहना है कि प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था का प्रक्रियात्मक ढांचा घरेलू और विदेशी व्यवस्थाओं से सूचना प्राप्त करता है। उसके बाद सूचना की जांच पड़ताल और कांट–छांट होती है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में सूचनाओं के स्वागत व जांच पड़ताल के लिए स्वागतकर्ता तथा स्वागत व्यवस्थाऐं होती है। इसमें स्मृति का प्रतिनिधित्व करने वाले संरचनाऐं सूचना को तुरन्त ही प्रक्रियाओं और परिणामों से संबंध रखने वाली अतीत के अनुभवों को अधिमान्यताओं से जोड़ देती है। मूल्यों को निर्धारित करने वाली सूचनाऐं संभावनाओं को अधिमान्यताओं से जोड़ देती है और इसके बाद ही राजनीतिक व्यवस्था निर्णय निर्माण की तरफ आगे बढ़ती है। संचालक संरचनाओं से और भी संरचनाऐं होती है जो व्यवस्था द्वारा लिए गए निर्णयों को लगू करती है। ये संरचनाऐं व्यवस्था द्वारा लागू किए गए निर्णयों के उपर लोगों की प्रतिक्रिया के संबंध में सूचना को फिर से राजनीतिक व्यवस्था में प्रभावित कर देती है।[5] उनके निर्णय निर्माण तक वहीं प्रक्रिया दोहराई जाती है जो पहले दोहराई गई थी। इस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था की समस्त प्रक्रिया सूचनाओं के प्रवाह प्रतिमान के रूप में चलती रहती है। सूचना–प्रवाहों और संक्रियात्मक संकल्पनाओं का संबंध सूत्रों, भारों व भार–क्षमता से होता है। सूचना प्रवाहों का प्रतिमानित सेट वास्तव में संचार का ताना–बाना होता है। भारत का तात्पर्य सूचना की भेजी जाने वाली मात्रा से है। भार क्षमता इस बात पर निर्भर है कि सूचना के आदान प्रदान के लिए कितने सूत्र व्यवस्था में उपलब्ध है। भार–क्षमता का संबंध ग्रहणशीता, विश्वस्तता और विकृति से भी जोडा जाता है। यह सब राजनीतिक व्यवस्था में सूचना के संसाधन का कार्य करते है। यदि कोई अभिकरण व्यवस्था में आने वाली सूचना से कुशलता से निपट लेता है तो यह इसकी अनुक्रियात्मकता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो अवश्य सूचना के प्रवाह के रास्ते में कोई बाधा है।

परिणामों से संबंधित संकल्पना में प्रतिसम्भरण या पुनर्निवेश की संकल्पना शामिल हे। कार्ल ड्यूश ने नॉरबर्ट वीनर ये से अवधारणा ग्रहण की है। उसने अपनी इस संकल्पना पर ही संचार सिद्धान्त खड़ा करते हुए कहा है कि व्यवस्था की प्रतिसम्भरण की प्रक्रिया ही उसे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रभावकारी अधिकार देती है। कार्ल ड्यूश ने प्रतिसम्भरण की व्यवस्था को सकारात्मक तथा नकारात्मक दो भागों में बांटा हैं। उसने व्यवस्था के व्यवहार को घोषित दिशा में ले जाने वाली शक्ति को सकारात्मक प्रतिसम्भरण कहा है। उसका कहना है कि नकारात्मक प्रतिसम्भरण वह प्रक्रिया है जो निर्णयों और उनको लागू करने से उत्पन्न होने वाले परिणामों को स्वतः ही देशी दिशा में मोड देता है जो व्यवस्था को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के पास ले जाते है। कार्ल ड्यूश का मानना है कि नकारात्मक प्रतिसम्भरण की व्यवस्था ही व्यवस्था का आंतरिक संतुलन कम करके उसे गतिशील बनाए रखती है। इसी कारण कुछ विद्यवानों ने नकारात्मक प्रतिसंभरण को संचार सिद्धान्त की आत्मा कहा है। इस नकारात्मक प्रतिसम्भरण द्वारा ही कोई व्यवस्था अपने निर्णयों या निर्गतों को नियमित करके वांछित लक्ष्यों की तरफ ले जाती है। इसलिए इसका राजनीतिक व्यवस्था में होना बहुत आवश्यक है। विशिष्ट संकल्पनाऐं नकारात्मक प्रतिसम्भरण की प्रक्रियाओं के परिचालन की व्याख्या से संबंधित है। इस भार, विलम्ब, लाभ तथा अग्रता शामिल है।[6] भार का अभिप्राय परिवर्तनों की उस व्यापकता और गति से है जो व्यवस्था को अपने लक्ष्यों की तरफ ले जाती है। विलम्ब परिणामों और कार्यों के परिणामों के बारे में सूचना पर रिपोर्ट और कार्य करने में देरी का माप है। लाभ इस सूचना की प्राप्ति के बारे में व्यवस्था की अनुक्रियाओं से संबंधित विस्तार को दिखाता है। अग्रता भारी परिणामों के पूर्वानुमानों की अनुक्रियाओं में कार्य करने की क्षमता है।[7]

निष्कर्ष :– इस प्रकार राजनीतिक संचार के सिद्धान्त के माध्यम से कार्ल ड्यूश ने राजनीतिक व्यवस्था के प्रक्रियात्मक पहलू पर जोर देकर राजनीतिक व्यवस्था को व्यवस्थित व गतिशील बनाए रखने पर जोर दिया है। उसका कहना है कि राजनीतिक व्यवस्था के सभी कार्य राजनीतिक संचार के माध्यम से ही किए जाते है। सभी राजनीतिक संरचनाऐं मांगों या निवेशों की प्रक्रिया से लेकर नियम–निर्माण व निर्णयों के निर्गतों के रूप में कार्य करने तक राजनीतिक प्रक्रिया के अंग बनी रहती है। राजनीतिक संचार ही राजनीतिक व्यवस्था के सभी अंगों की सूचना प्रवाह से जोड़कर उसकी क्रियात्मकता में वृद्धि करता है। अतः निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक संचार राजनीतिक प्रक्रिया के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जौहरी जे.सी. : प्रिंसिपल्स ऑफ मॉर्डन पोलिटिकल साइंस स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, 2010, पृ. 140
2. महाजन वी.डी. : पोलिटिकल थ्योरी, एस चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 2013, पृ. 145
3. आशीर्वादम, ए.डी. : 'पालिटिक्स थ्योरी', द अपर इण्डिया पब्लिशिंग हॉउस, लखनऊ, 1984, पृ. 160
4. मिश्र, कृष्ण कान्त : 'राजनीति विज्ञान' एस.चन्द्र एण्ड कम्पनी 7361, रामनगर, नई दिल्ली, 2010, पृ. 165
5. गाबा, ओम प्रकाश : 'भारतीय राजनीतिक विचारक', के.एल. एण्ड संस प्रा. लि. 23, नई दिल्ली, 1999, पृ. 220
6. जाटव, डी.आर. : 'प्रमुख पाश्चात्य दार्शनिक', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2004, पृ. 132
7. जोशी, नवीन चन्द्र : 'डेमोक्रेसी एण्ड हूमन वेल्यू', न्यू देहली स्टलिंग पब्लिशिंग प्राईवेट लिमिटेड, 1979, पृ. 120

RRIJM 2015, All Rights Reserved